



जिलेट देखभाल स्टाफ़

(उनकी नज़र से जिनकी देखभाल हुई)

“क्लिनिक मरीज़ों का इलाज करता है। देखभाल करने वाला समुदाय लोगों को सहारा देता है।”

I. आंतरिक स्टाफ़

तकनीक से पहले लोग होते हैं।

अनुभव सुनाए जा सकते हैं, पर आगे सौंपे नहीं जा सकते।

हम कोई कहानी सौ बार सुन सकते हैं, उसका अध्ययन कर सकते हैं, उसे परख सकते हैं, उसका हर ब्योरा तक सीख सकते हैं। पर अनुभव हमेशा एक निजी चीज़ ही रहता है। कोई उसे किसी और को उस तरह नहीं थमा सकता जैसे कोई मैनुअल थमाया जाता है।

ज्ञान की बात अलग है।

ज्ञान बाँटा जा सकता है, आगे दिया जा सकता है, सिखाया जा सकता है।

और फिर भी, ऐसा हमेशा होता नहीं।

कुछ लोग अपने ज्ञान की रखवाली निजी जायदाद की तरह करते हैं, इस डर से कि उसे आगे देने का मतलब अपनी पेशेवर क़ीमत या आर्थिक बढ़त खो देना होगा। दूसरे, इसके उलट, समझते हैं कि क़ाबिलियत का असली मूल्य बाँटने से घटता नहीं, बढ़ता है।

तकनीकें अपडेट और निवेश के ज़रिए आगे बढ़ती हैं।

बहुतों को सिर्फ़ लागत दिखती है।

जो सचमुच निवेश करते हैं, उन्हें कुछ और दिखता है।

वे कोई मशीन, कोई सॉफ़्टवेयर या कोई औज़ार ख़रीदने के लिए निवेश नहीं करते।

वे इसलिए निवेश करते हैं कि लोग उनके ज़रिए जो कर पाते हैं, वह बेहतर हो।

आर्थिक मुनाफ़ा अक्सर एक नतीजा भर होता है।

भरोसा, साख और पेशेवर होने की छाप ही इस सफ़र की असली मंज़िलें हैं।

इसीलिए कोई संस्थान कभी अपनी मशीनों की गिनती से नहीं पहचाना जाता।

संस्थान उन लोगों से पहचाना जाता है जो उसमें काम करते हैं।

उनकी तैयारी से।

सुनने की उनकी क्षमता से।

जो वे जानते हैं उसे बाँटने की उनकी तत्परता से।

हम जो हैं, वह उन लोगों की बदौलत बनते हैं जिनसे हम मिलते हैं।

हर नतीजे पर किसी ऐसे के अदृश्य दस्तखत होते हैं जिसने हमें कुछ सिखाया, कोई गलती सुधारी, कोई राह दिखाई, या बस हमें अपना वक्त दिया।

बुजुर्ग इस सच्चाई को खूब जानते हैं।

उनके सबसे अनमोल गुणों में से एक है सब्र।

वह किसी डिग्री से हासिल नहीं होता।

वह किसी ट्रेनिंग कोर्स में नहीं सीखा जाता।

वह अनुभव से, गलतियों से, इंतज़ार से और वक्त के साथ पार की गई आजमाइशों से पैदा होता है।

वह एक खामोश क्राबिलियत है।

उनमें से एक, जो बायोडेटा में शायद ही कभी दिखती हैं, पर जो अक्सर एक पेशेवर और दूसरों की देखभाल कर सकने वाले इंसान के बीच का फ़र्क बन जाती हैं।

क्योंकि तकनीकों, प्रक्रियाओं और विशेष कौशलों से पहले हमेशा लोग होते हैं।

और वही बाक़ी हर चीज़ को अर्थ देते हैं।

किसी स्वास्थ्य संस्थान में चलते-फिरते चेहरे अक्सर वही होते हैं।

फ़िज़ियोथेरेपिस्ट।

ऑक्युपेशनल थेरेपिस्ट।

नर्स।

देखभाल-कर्मी।

प्रशासनिक कर्मचारी।

कामों के तौर पर नहीं।

भूमिकाओं के तौर पर नहीं।

एक निरंतर मानवीय मौजूदगी के तौर पर।

वही हैं जो स्वागत करते हैं, सुनते हैं, सँभालते हैं, इंतज़ाम करते हैं, हौसला देते हैं, और हर दिन उनके सफ़र में साथ चलते हैं जो अपनी ज़िंदगी में लौटने की कोशिश कर रहे हैं।

उन्हें जानना, उनसे बात करना, उनकी कहानियाँ सुनना और अपनी सुनाना आज भी एक खुशकिस्मती है।

क्योंकि पुनर्वास कभी अकेले का सफ़र नहीं होता।

वह एक ही लक्ष्य की ओर साथ काम करते कई कौशलों का नतीजा है।

क्राबिलियत शरीर को ठीक करती है।

मौजूदगी राह को थामे रखने में मदद करती है।

II. उपसंहार

सबसे पहले लोग: बाक़ी सब इंतज़ार कर सकता है।

III. लेखक-पृष्ठ

यह रचना किसी के कहने पर नहीं लिखी गई।

यह बेची नहीं गई।

यह किसी व्यावसायिक मक़सद से नहीं बनाई गई।

यह पुनर्वास के, मानवीय गरिमा के और लोगों के आपसी रिश्ते के मूल्य की गवाही देने के लिए लिखी गई।

माँगा गया एकमात्र मेहनताना एक प्रतीकात्मक डॉलर है — रचना की कीमत के तौर पर नहीं, बल्कि देखभाल, उम्मीद और ज़िम्मेदारी की संस्कृति के प्रति साझा प्रतिबद्धता के साक्ष्य के तौर पर।

फर्दिनांदो